International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 14-12-2020; Accepted: 29-12-2020; Published: 22-01-2021
www.hindijournal.com
Volume 7; Issue 1; 2021; Page No. 27-29

हिंदी उपन्यासों में अभिव्यक्त कृषक जीवन की चुनौतियाँ

संदीप त्रिपाठी

पीएच. डी. (हिंदी), शोधार्थी कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल, उत्तराखंड, भारत

सारांश

भारत एक कृषि प्रधान देश है इसका पूरा श्रेय उन लोगों को जाता है, जो दिनभर कड़े परिश्रम के साथ धूप, गर्मी, बरसात की परवाह किये बिना खेतों में अनाज का उत्पादन करते है। इसलिए ही इन लोगों को हमारे देश में किसान और अन्नदाता कहा जाता है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने किसानों को भारत की आत्मा कहा था। लेकिन किसानों की अनदेखी कर विकास को स्थायित्व प्रदान करने की कल्पना नहीं की जा सकती। आज भी देश की कुल जनसंख्या का एक बड़ा भाग कृषि पर आश्रित है। पिछले कुछ दशकों में, अर्थव्यवस्था के विकास में मैन्यूफैक्चरिंग और सेवा क्षेत्रों का योगदान तेजी से बढ़ा है, वहीं कृषि क्षेत्र के योगदान में जबरदस्त गिरावट देखने को मिली है। इन आंकड़ों को ध्यान में रखते हुए सरकार को कृषि क्षेत्र की मजबूती के लिए संवेदनशीलता के साथ कार्य करने की आवयश्कता है। सरकार ने 2023 तक देश के किसानों की आय को दोगुना करने का लक्ष्य रखा है। इस लक्ष्य को ठोस कार्य योजना से ही प्राप्त किया जा सकता है।

मूलशब्द: भारतीय किसान, हिंदी, उपन्यास, वैश्वीकरण, शोषण आदि।

प्रस्तावना

"हो जाए अच्छी भी फसल, पर लाभ कृषकों को कहाँ
खाते, खवाई, बीज ऋण से हैं रंगे रक्खे जहाँ
आता महाजन के यहाँ वह अन्न सारा अंत में
अधपेट खाकर फिर उन्हें काँपना हेमंत में"[1] (मैथिलीशरण गुप्त)

मैथिलीशरण गुप्त की ये पंक्तियाँ तत्कालीन किसानों की दयनीय दशा का चरित्र-चित्रण करती हैं। आज भी किसानों की दशा कुछ वैसी ही बनी हुई है। मुझे भारत के द्वितीय प्रधान मंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी की याद आ रही है जिन्होंने एक नारा दिया था- 'जय जवान – जय किसान'। यह नारा सच में एक नारा ही बन कर रह गया। आजादी के इतने वर्षों पश्चात् भी भारत के किसानों की स्थिति में कोई अधिक बदलाव नही आया है। कभी उसे प्राकृति की मार झेलनी पडती है तो कभी राजनेताओं की ओछी राजनीती का शिकार होना पड़ता है तो कभी मंडी में बैठे पूंजीपति और साहूकार के कर्ज के बोझ तले अपनी पुरखों की भूमि गिरबी रखने को विवश होना पड़ता है। इन सभी समस्याओं से ग्रसित होने के बावजूद भी किसान कम आमदनी में कृषि करता है और समस्त विश्व के लोगों के लिए अपने और अपने परिवार के हित की परवाह किये बिना बंजर भूमि में अनाज का उत्पादन करता है। 1990 के दौर के पश्चात किसानों के समक्ष "आत्महत्या" जैसी एक और भयानक स्थिति उत्पन्न हुई जिसमे प्रतिवर्ष 10 हज़ार से अधिक आत्महत्या का आंकड़ा दर्ज किया गया। 1997 से 2006 के बीच लगभग 1,66,304 किसानो ने आत्महत्या की[2] इस दौरान खराब मानसून के कारण नष्ट हुई नकदी फसलों को किसानों की आत्महत्याओं का मुख्य कारण माना गया। किसानों की आर्थिक हालत को बेहतर करने के लिए 2004 में केंद्र सरकार ने एमएस स्वामीनाथन की अध्यक्षता में नेशनल कमीशन ऑन फार्मर्स का गठन किया। इसे आम लोग स्वामीनाथन आयोग भी कहते हैं। इस आयोग ने अपनी पांच रिपोर्टें सौंपी। अंतिम व पांचवीं रिपोर्ट 4 अक्तूबर, 2006 में सौंपी गयी थी। इस रिपोर्ट में भूमि सुधारों की गति को बढ़ाने पर खास जोर दिया गया था। अयोग की सिफारिशों में किसान आत्महत्या की समस्या के समाधान, राज्य स्तरीय किसान कमीशन बनाने, सेहत सुविधाएं बढ़ाने व वित्त-बीमा की स्थिति पुख्ता बनाने पर भी विशेष जोर दिया गया था। एमएसपी औसत लागत से 50 फीसदी ज्यादा रखने की सिफारिश भी की गई है ताकि छोटे किसान भी मुकाबले में आएं, यही ध्येय खास है। किसानों की फसल के न्यूनतम समर्थन मूल्य कुछेक नकदी फसलों तक सीमित न रहें, इस लक्ष्य से ग्रामीण ज्ञान केंद्र व मार्केट दखल स्कीम भी लांच करने की सिफारिश रिपोर्ट में की गयी थी। आयोग की सिफारिशों में किसान आत्महत्या की समस्या के समाधान, राज्य स्तरीय किसान कमीशन बनाने, सेहत सुविधाएं बढ़ाने और वित्त-बीमा की स्थिति पुख्ता बनाने पर भी विशेष जोर दिया गया। लेकिन सरकार की कछुए जैसी चाल के कारण इतने वर्षों के पश्चात भी स्वामीनाथन आयोग की रिपोर्ट को आज तक लागू नहीं किया जा सका है।[3]

कर्ज से दबा भारतीय किसान

राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक के द्वारा 2017-18 में जारी की गयी रिपोर्ट के अनुसार, पिछले पांच साल में कृषि कर्ज 61 फीसदी बढ़कर 11.79 लाख करोड़ रुपये तक पहुंच गया था। जो की वर्ष 2013-14 में कुल कृषि कर्ज 7.30 लाख करोड़ रुपये था। इस रिपोर्ट के अनुसार भारत में 10.07 करोड़ किसानों में से 52.5 फीसदी किसान भारी कर्जे में दबे हुए हैं। हर कर्जदार किसान पर करीब 1.046 लाख रुपये का कर्ज है। लेकिन, जब भी किसानों को कर्ज से बाहर लाने के लिए कर्ज माफी की बात की जाती है तो क्रेडिट कल्चर के नाम पर कृषि कर्ज माफी की आलोचना की जाती है। जबकि कॉरपोरेट कर्ज माफी पर क्रेडिट कल्चर की बात नहीं की जाती है। सरकारी बैंकों ने पिछले तीन वर्षों में 2.75 लाख करोड़ रुपये के कर्ज माफ किए है। माफ करने वाले बैंकों में सबसे ऊपर भारतीय स्टेट बैंक रहा है। इसने 220 लोन डिफॉल्टरों के 76,600 करोड़ रुपये कर्ज माफ किए है। इन आंकड़ो के अनुसार किसान से कर्ज वसूली की प्रक्रिया को भी देखा जाए तो यहां कॉरपोरेट ही किस्मत वाले नजर आते हैं। कॉरपोरेट की तुलना में किसान अगर एनपीए करता है, तो उसके लिए कर्ज रिकवरी के नियम बहुत सख्त हैं। कर्ज न चुकाने की स्थिति में किसानों के ऊपर क्रिमिनल चार्ज लगाए जाते हैं। यह सच है कि 1990 के सुधारों के बाद भारतीय अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों में वृद्धि देखी गई। लेकिन, कृषि क्षेत्र में सुधारों की कमी के चलते किसानों को नुकसान उठाना पड़ा है। नीति आयोग की एक रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2011 से लेकर वर्ष 2016 तक कृषि विकास दर 0.5 फीसदी औसतन रही है। भारतीय रिजर्व बैंक के आंकड़ों के अनुसार, 2011-12 और 2016-17 के बीच कृषि में सार्वजनिक क्षेत्र का निवेश सकल घरेलू उत्पाद के 0.4 फीसदी के आसपास रहा है। यह देखते हुए कि देश की लगभग आधी आबादी कृषि पर निर्भर है। यह स्थिति बताती है कि

हमारे देश में कृषि की जानबूझ कर सरकारों द्वारा अनदेखी की गई है।[4]

हिंदी उपन्यास और कृषक जीवन

समाज का दर्पण कहा जाने वाला हिंदी साहित्य भी इससे अछूता नही रहा है, किसान के जीवन पर आधारित प्रमुख उपन्यासों में साहित्यकारों ने कृषकों की सामाजिक, आर्थिक और राजनितिक स्थिति तथा दयनीय और भयावह स्थिति को दिखाया गया है। उपन्यासकारों ने सामन्ती व्यवस्था, महजनी सभ्यता, जमींदारी प्रथा, जमीन चकबंदी, जमीन से बेदखली, भूमिहीन होना तथा बाजारवाद का साधारण किसानों की चकाचौंध से बदलती संस्कृति, सरकारी बैंको में कर्ज अदायगी न करने की समस्या तथा किसान आत्महत्या इन सारी समस्याओं को लेखक अपने-अपने तरीके से अभिव्यक्ति दी है।

'कलम का सिपाही' कहे जाने वाले भारतीय लेखक मुंशी प्रेमचंद ने जिस तरह किसानों की दयनीय स्थिति, कर्ज की समस्या तथा किसानों के प्रति हो रहे शोषण आदि को अपने लेखन का एक अभिन्न हिस्सा मानते हुए स्वतंत्र रूप से गरीब किसानो के पक्ष में अपनी बात रखी वो वाकई में काबिले तारीफ़ है| 'गोदान' और 'प्रेमाश्रम' जैसे उपन्यासों में सामन्ती और महाजनी व्यवस्था का शिकार किसानों की दयनीय स्थितियों का चित्रण किया है। जो समस्याएं प्रेमचन्द के युग में थी वे समस्याऐं आज भी भारतीय किसानों को त्रस्त करती हैं। प्रेमचन्द का 'गोदान' उपन्यास किसानों की इसी त्रासदी की महागाथा है जो युगों-युगों तक चीखती-चिल्लाती किसानों की समस्याओं को उजागर करती रहेगी। 'गोदान' का होरी भारतीय किसान का प्रतिनिधित्व करता है। होरी उन तमाम गरीब किसानों की विशेषताएं लिए हुए है जो खेतों में जीतोड़ मेहनत करने के बाद भी अपने परिवार वालों का भरण-पोषण बड़ी मुश्किल से कर पाता है। भारतीय समाज में व्याप्त सामंती और सूदखोरी जैसी कुव्यवस्थाओं का शिकार 'होरी' होता है। नजराना देने के बाद भी जब होरी रायसाहब के यहाँ बेगार करने जाता है तो मुन्नी कड़े शब्दों में विरोध करती है। फिर भी सामाजिक परंपरा में बंधा होरी उसकी एक नहीं मनाता। अंततः होरी अपने खेतों में काम करते- करते प्राण त्याग देता है। ऐसी स्थिति केवल एक होरी की ही नहीं है बल्कि कई होरी इस समाज में कर्ज भरा जीवन जी रहें है। गोदान उपन्यास किसान जीवन के अंदरूनी तह को परत-दर-परत खोलता है। किसानों से लगान इतना अधिक लिया जाता था कि इन पंक्तियों से समझा जा सकता है :

'अहा विचारे दुःख के मरे निसिदिन पच पच मरे किसान।
जब अनाज उत्पन्न होय तब सब उठवा ले जाय लगान।।' बालमुकुन्द गुप्त

डा. रामविलास शर्मा इस सन्दर्भ में कहते हैं कि 'गोदान' की गति धीमी है, होरी के जीवन की गति की तरह। यहाँ सैलाब का वेग नहीं है, लहरों के थपेड़े नहीं हैं। यहाँ ऊपर से शांत दिखने वाली नदी भँवरें ही जो भीतर-ही-भीतर मनुष्य को डुबोकर तलहटी से लगा देती हैं और दूसरों को वह तभी दिखाई देता है जब उसकी लाश ऊपर आती हुई बहने लगे।

इसी तरह संजीव द्वारा लिखित 'फाँस' उपन्यास में महाराष्ट्र राज्य के विदर्भ क्षेत्र में रहने वाले किसानों के जीवन तथा उनके जीवन में आने वाली तमाम विनाशकारी समस्याओं के बारे में सजीव तरह से चित्रण किया गया है। यह उपन्यास अन्नदाता कहे जाने वाले किसानों द्वारा किए जा रहे आत्महत्या पर केन्द्रित है। अपने इस उपन्यास के माध्यम से संजीव ने उन सभी पहलुओं को दिखाने की पूर्ण कोशिश की हैं जिन पहलुओं से केवल विदर्भ का किसान ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण भारतीय किसानों को गुजरना पड़ रहा है। इस उपन्यास की कथावस्तु की शुरुआत महारष्ट्र के 'यवतमाल' जिले से होती है जो आधा वन है और आधा गाँव, एक ओर देखो तो जंगल दिखाई देता है दूसरी ओर पठार। वनगांव का चित्र संजीव इस तरह खीचते हैं- "भला कोई कह सकता है कि सुखाड़ के ठनठनाते यवतमाल जिले के इस पूरबी छोर पर 'बनगाँव' जैसा कोई गाँव भी होगा जो आधा वन होगा, आधा गाँव, आधा गीला होगा, आधा सूखा। स्कूल में लड़के के साथ लड़कियाँ भी, जुए में भैस के साथ बैल भी। जो भी होगा आधा-आधा।"[5]

संजीव ने इस उपन्यास में एक किसान की बुनियादी समस्याओं जैसे- बीज बोने से लेकर खाद-पानी तथा घर परिवार की आर्थिक समस्या या फिर उत्पादित की गई फसलों को बेचने की जैसी समस्याओं को केन्द्रित किया है। 'फाँस' उपन्यास में संजीव ने 'शिबू' के माध्यम से किसानों की बदहाली को दिखाया है। आर्थिक समस्याओं का सामना करते-करते अंत में हताश और निराश होकर आत्महत्या कर लेता है। संजीव का यह उपन्यास सामाजिक संरचना के तमाम जटिलताओं के बीच खेती किसानी की त्रासदी के हकीकतों को परत-दर-परत भेदते हुए समस्या और विकास के नाम पर जारी उपक्रमों की समीक्षा करता है।[6] यह किसान जो कभी 'भारत की आत्मा' के नाम से जाना जाता रहा है वही आज अपनी गरीबी भरी जिंदगी से टूटकर आत्महत्या करने पर मजबूर हो रहा है। यह आत्महत्या एक किसान की आत्महत्या नहीं है बल्कि यह किसानी संस्कृति की हत्या है।

इस कड़ी में किसान जीवन की समस्याओं को उजागर करता पंकज सुबीर का उपन्यास 'अकाल में उत्सव' है जो गाँव और किसानी संस्कृति पर आधारित एक बहुत ही बेहतरीन उपन्यास है। किस प्रकार किसान महाजनी, सामंती व्यवस्था सूदखोरी और कर्ज के दलदल में फंसकर आत्महत्या करने पर विवश हो रहा है। इस उपन्यास में जहां एक ओर सरकारी फंड को सही समय में उपयोग करने के लिए सरकारी प्यादों द्वारा उत्सव मनाया जा रहा है ओर वहीं दूसरी तरफ 'सूखापानी' नामक गाँव के किसान आत्महत्या कर रहा है। इस उपन्यास में चित्रित गाँव 'सूखापानी' का एक अजीब नाम है। यानी किसान की फसल को अतिवृष्टि और अनावृष्टि दोनों ही स्थिति में नुकसान है। कथाकार संजीव द्वारा लिखित उपन्यास 'फांस' और पंकज सुबीर का 'अकाल में उत्सव'। इन दोनों उपन्यासों में कर्ज जैसी समस्या को किसान परिवार में पीढ़ी-दर-पीढ़ी ट्रांसफर होते हुए दिखाया गया है।

'अकाल में उत्सव' उपन्यास की कथावस्तु 'सूखापनी' नामक गाँव से प्रारम्भ होती है जो मध्य प्रदेश का एक आदिवासी गाँव है। इसकी कहानी दो एकड़ जमीन के जोत वाले छोटे किसान रामप्रसाद के इर्द-गिर्द घूमती है। किसान खेतों में रात दिन जीतोड़ मेहनत करता है तभी तो फसलें भी अच्छी होती हैं परन्तु महाजन खलिहान पर ही फसल को उठवा लेता है। अंत में रामप्रसाद बैंक द्वारा लिया गया कर्ज के फर्जीवाड़े का शिकार होता है। ऊपर से प्रकृति की मार से उसकी सारी फसल बर्बाद हो जाती है। बैंक के कर्जे को सुनकर उसे ऐसा सदमा लगता है कि वह आत्महत्या कर लेता है। और अंत में भ्रष्ट शासन तंत्र के चलते उसे पागल सिद्ध कर दिया जाता था। इस उपन्यास में प्रशासन की कथित चालाकियों को बेपर्दा किया गया है। शासन तंत्र इतना भ्रष्ट है कि किसानों के हित में सरकार द्वारा चलाई गई योजना जिसके अंतर्गत किसान अपना 'क्रेडिट कार्ड' दिखाकर कृषिकार्य हेतु बैंक से लोन के रूप में रूपया ले सकता है। समाज में फर्जीवाड़ा इतना हो रहा है कि बैंक अधिकारी और दलाल की मिली भगत से गरीब और भोले भाले किसानों के नाम पर लोन ले लिया करते हैं।[7]

अकाल में उत्सव उपन्यास की कथावस्तु दो खण्डों में चलती है। एक तरफ मुख्यमंत्री के आदेशानुसार भव्य उत्सव के आयोजन की चर्चा हो रही है तो दूसरी तरफ वर्षा, तूफ़ान और ओले पड़ने से किसानों के नष्ट हुई फसल का दृश्य दिखाई दे रहा है। प्रशासनिक अधिकारियों को मंच की सजावट की चिंता ज्यादा रहती है। भारत का अन्नदाता किसान की कोई चिंता नहीं रहती है। वास्तव में यह उपन्यास किसानों के शोषण का रेशे-रेशे को उधेड़ने वाला उपन्यास है जो यह जाहिर करता है कि किसानों की आत्महत्या के पीछे केवल ओला वृष्टि, सूखा और प्रशासनिक निष्ठुरता ही जवाबदार है। इसके पीछे और भी कई कारण हैं जो साफ-साफ दिखाई नहीं देते हैं।

भारतीय किसानों का हृदय इतना सरल और निष्कपट होता है कि वह मनुष्य तथा मानवेतर प्राणियों से भी भावनात्मक लगाव रखता है। 'तोड़ी' नामक आभूषण जिसे स्त्रियाँ पैरों में पहनती हैं को आधार बनाकर लेखक ने किसानों का जो गहनों के प्रति परंपरागत लगाव होता है उसे बड़े ही हृदयविदारक लहजे में अभिव्यक्त किया है। रामप्रसाद जब तोड़ी बेचने महाजन के पास जाता है वहाँ का दृश्य उसे अपने पुरखों की बनी बनाई ईमारत को ढहते दिखाई देता है। तोड़ी पिघल रही है ऐसा लग रहा है कि कोई पदार्थ नहीं बल्कि रामप्रसाद का हृदय पिघल रहा है।

अकाल में उत्सव उपन्यास का ताना बना मुहावरों और कहावतों से बुना गया है। इस उपन्यास को आलोचकों ने अपने अपने तरीके से व्याख्यायित किया है। नासिरा शर्मा ने इसे 'प्रेमचन्द का गाँव एक नई भाषा शैली में फिर से जिन्दा हो उठा' कहा है, महेश कटारे ने 'भारतीय किसान के जीवन का शोकगीत', डॉ. पुष्पा दुबे ने 'कंपकंपाती लौ और थरथराते धुंएँ की दुःख भरी कहानी' कहा, ब्रजेश राजपूत ने 'किसानों के दुःख दर्द का बेचैन करने वाला किस्सा' कहा, ओम शर्मा ने 'आज के किसान की जिंदगी का सच्चा दस्तावेज़ कहा। मेरे हिसाब से यह उपन्यास 'किसान की बदकिस्मती का जीता जागता आईना' है। ऐसा आईना जिसमें किसानों की दयनीयता को देखा जा सकता है। एक बार फिर से पंकज सुबीर ने गंवाई जीवन शैली और किसान आत्महत्या जैसे विषय को कथा साहित्य में पाठकों, आलोचकों और समीक्षकों को सोचने पर मजबूर करता है।

निष्कर्ष

स्वतंत्रता पूर्व से लेकर वर्तमान परिदृश्य में अगर किसानों की स्थिति पर ध्यान दिया जाए तो उनके जीवन में कोई विशेष सुधार नहीं आया है। तब से लेकर अब तक किसान का किसी न किसी रूप में समाज के हर वर्ग के द्वारा शोषण होता रहा है उनके हित के लिए विकास की अनेक योजनाएं तो बनी लेकिन आज तक ज़मीनी स्तर पर भ्रष्टाचार की वजह से सफल नही हो पाई है। इसी वजह से भारत की आत्मा कहे जाने वाले किसान भारतीय समाज में हमेशा से आर्थिक कठिनाइयों से जूझते नजर आये हैं। हिंदी साहित्य के गोदान, फाँस और अकाल में उत्सव जैसे उपन्यास में कथाकारों ने किसानो के यथार्थ जीवन का चित्रण इतने सुंदर तरीके से किया है की वो सरकार और उनके द्वारा चलाई जा रही नीतियों का आइना दिखाने के लिए काफी है इन उपन्यासों में संघर्ष करते किसानों को केंद्र में रखकर उनके यथार्थ जीवन से जुडी हुई घटनाओं से आम जनता को परिचित करवाया गया है किसी में किसान महाजनी या जमींदारी व्यवस्था का शिकार है तो किसी में सरकारी बैंकों से लिया गया कर्ज का। कर्ज की अदायगी न होने के कारण किसान आत्महत्या कर रहा है इन त्रासदियों की घटनाचक्र की सम्पूर्ण सामजिक विडम्बनाओं के साथ शब्दबद्ध किया गया है। वह सिर्फ हमारी संवेदना को झकझोरता ही नहीं बल्कि उपन्यास को एक कलात्मक ऊँचाई भी प्रदान करता है। देखा जाय तो आज भी सामंती और पूंजीवादी संस्कृति की टकराहट में किसानी संस्कृति पिस रही है। इसका इतना बड़ा दुष्परिणाम है यही है कि वर्तमान समय में किसान लाखों की संख्या में आत्महत्या कर रहे हैं।

संदर्भ सूची

1. https://abhivyakti.life/2019/03/30
2. https://www.indianfarmer.org/2019/09/kisano-ki-aatmhatya-ke-karan.html 11.51 pm
3. https://www.gaonconnection.com/desh
4. economictimes.indiatimes.com/articleshow
5. संजीव, फाँस, वाणी प्रकाशन, दरियागंज नई दिल्ली, संस्करण 2015, पृ. सं – 9
6. फाँस, संजीव, फाँस, वाणी प्रकाशन, दरियागंज नई दिल्ली, संस्करण 2015, पृ. सं – 153
7. अकाल में उत्सव, पंकज सुबीर, शिवना प्रकाशन, मध्य प्रदेश, सीहोर , संस्करण 2016, पृ. सं. - 107